

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये तृतीयं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে তৃতীয়ং দশকম্ ॥

ভক্তস্বরূপবর্ণনং ভক্তিপ্রার্থনা চ

পঠন্তো নামানি প্রমদভরসিকৌ নিপতিতাঃ
স্মরন্তো রূপং তে বরদ কথযন্তো গুণকথাঃ।
চরন্তো যে ভক্তাস্ত্বয়ি খলু রমন্তে পরমমু -
নহং ধন্যান্মন্যে সমধিগতসর্বাভিলষিতান্ ॥ 3.1 ॥

গদক্লিষ্টং কষ্টং তর চরণসেৱারসভরে -
হপ্যনাসক্তং চিত্তং ভৱতি বত রিষণে কুরু দযাম্।
ভৱৎপাদান্তোজস্মরণরসিকো নামনিৱহা -
নহং গাযং গাযং কুহচন রিৱৎস্যামি রিজনে ॥ 3.2 ॥

কৃপা তে জাতা চেৎ কিমির নহি লভ্যং তনুভূতাং
মদীয়ক্লেশৌঘপ্রশমনদশা নাম কিযতী।
ন কে কে লোকেহস্মিন্ননিশমযি শোকাভিরহিতা
ভৱদ্ভক্তা মুক্তাঃ সুখগতিমসক্তা রিদধতে ॥ 3.3 ॥

মুনিপ্রৌঢ়া রুঢ়া জগতি খলু গূঢ়াত্মগতযো
ভৱৎপাদান্তোজস্মরণরিরুজো নারদমুখাঃ।
চরন্তীশ স্নৈৱং সততপরিনির্ভাতপরচি -
ৎসদানন্দাদ্বৈতপ্রসরপরিমগ্নাঃ কিমপরম্ ॥ 3.4 ॥

ভৱদ্ভক্তিঃ স্ফীতা ভৱতু মম সৈৱ প্রশমযে -
দশেষক্লেশৌঘং ন খলু হৃদি সন্দেহকণিকা।

न चेद्र्यासस्योक्तिस्तुर च रचनं नैगमरचो
भरेन्मिथ्या रथ्यापुरुषरचनप्रायमथिलम् ॥ 3.5 ॥

भरदुक्तिस्तारंप्रमुखमधुरा वरदगुणरसां
किमप्यारुटा चेदथिलपरितापप्रशमनी।
पुनश्चात्ते स्वात्ते रिमलपरिवोधोदयमिल -
न्महानन्दाद्वैतं दिशति किमतः प्रार्थ्यमपरम् ॥ 3.6 ॥

रिधुय क्लेशान् मे कुरु चरणयुग्मं धृतरसं
भरंक्लेशप्रार्थो करमपि च ते पूजनरिधौ।
भरन्मूर्त्यालोके नयनमथ ते पादतुलसी -
परिघ्राणे घ्राणं शरणमपि ते चारुचरिते ॥ 3.7 ॥

प्रभूताधिर्याधिप्रसभचलिते मामकहृदि
वरदीयं तद्रूपं परमसुखचिद्रूपमुदियां।
उदङ्गद्रोमाङ्गो गलितबह्वर्षाश्रुनिरहो
यथा रिस्मर्यासं दुरुपशमपीडापरिभरान् ॥ 3.8 ॥

मरुदोहाधीश वरधि खलु पराङ्गोऽपि सुथिनो
भरंक्लेशो सोऽहं सुबह्व परितप्ये च किमिदम्।
अकीर्तिस्ते मा भूद्वरद गदभारं प्रशमयन्
भरदुक्तोत्तंसं ऋतिं कुरु मां कंसदमन ॥ 3.9 ॥

किमुक्तेर्भूयोऽभिसुर हि करुणा यारदुदिया -
दहं तारद्वेद प्रहितरिधार्थप्रलपितः।
पुरः कुप्ते पादे वरद तव नेष्यामि दिरसान्
यथाशक्ति र्यक्तं नतिनुतिनिषेरा रिरचयन् ॥ 3.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये तृतीयं दशकं समाप्तम् ॥